प्रसंग

पंरपरागत ज्ञान पर आधारित मानवजनित गतिविधियाँ, प्राकृतिक संसाधनों, पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यावरण को कई प्रकार से प्रभावित करती ह। स्थानीय लोग वन्य जीवों, मछलियों एवं गौण वन उत्पादों का पारंपरिक तौर–तरीकों से दोहन करते ह, जिनका प्रभाव दोर्घकालीन हो सकता है। इस प्रकार की एक गतिविधि सदियों पुराना मछली का पर्व (मोण) है, जो कि उत्तराखण्ड़ के हिमालय क्षेत्र में मनाया जाता है और वह सामाजिक रूप से स्वीकार्य है। इसके कई उद्देश्य हैं और उसमें भारी संख्या में स्थानीय जन भाग लेते ह।

स्थानीय रूप में उपलब्ध औषधीय गुणों से युक्त झाड़ी (तिमरू) *(जैन्थोजाइलम आरमैटम)* के चूर्ण का प्रयोग कर भारी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती है। यह चूर्ण मछलियों को बेहोश करने का कार्य करता है और मछली के पर्व के दौरान, हर वर्ष जून–जुलाई के माह में जब अधिकतार जलीय जीवों का प्रजनन काल होता है, मछलियों को बेहोश कर के पकड़ने में इसका प्रयोग करने से जलीय पारिस्थितिक तंत्र मं बदलाव आने से मछलियों सहित जैव विविधता पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है व जीविका के साधनों एवं खाद्य सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार भारी मात्रा में हिमालय के ऊपरी क्षेत्रों में कीड़ा जड़ी *(ओफियोकोरडाइसेप्स साइनेनसिस)* दोहन व भारी संख्या में वन्य जीवों का बस्तर, छत्तीसगढ़ में 'प्रसाद उत्सव' के दौरान परंपरागत तौर पर मारे जाने के प्रभाव का संसाधनों के स्थानीय संरक्षकों की जानकारी मे पूर्ण रूप से नही है।

स्थानीय जनता एवं हितधारकों को इन परंपराओं, साँस्कृतिक गतिविधियों के विषय में वैज्ञानिक प्रमाणों व स्थानीय क्षमताओं के आधार पर संरक्षण की आवश्यकताओं, संशोधन योजनाओं, नियंत्रण के माध्यम, निगरानी और टिकाऊ पद्धितियों पर उनसे चचा करके उन्हें संवेदनशील बनाना और उनसे ऐसी परंपराओं का त्यागने के लिए मनाना है।

प्रायोजक

द यूनाइटेड स्टेटस इंडिया एजुकेश्नल फाऊन्डेशन (USIEF), नई दिल्ली (USIEF, फुल ब्राइट एल्मुनाई अवार्ड) एवं INTACH, नई दिल्ली

आयोजक, स्थान व अवधि

भा.कृ.अनु.प– भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान (ICAR-IISWC) देहरादून, दिनाँक **14-15 जून, 2019।** आयोजन स्थल देहरादून रेलवे स्टेशन से 04 किमी, अंतर्राज्य बस अड्डे से 07 किमी, जौली ग्रान्ट हवाई अड्डे से 24 किमी एवं नई दिल्ली से 260 किमी दूर है।

कौन भाग ले सकते है ?

वे सभी जो परंपरागत ज्ञान के प्रबंधन, मत्स्यकी, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, नदियों, जलीय जैव विविधता, वन संसाधन, वन्य जीव एवं पर्यावरण, प्रदूषण नियंत्रण और कृषि व पर्यावरण आधारित जीविका के साधनों व खाद्य सुरक्षा को प्रोत्साहित करते हों, भाग ले सकते है।

विशेष रूप से प्राथमिक व द्वितीय हितधारक जिसमें सूचना देने वाले किसान–मछुआरे, खेतों में काम करने वाले, पर्यावरण विद् विभिन्न संबंधित विभागों के सरकारी अधिकारी, प्राध्यापक, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, छात्र, शोधकर्ता, स्थानीय चयनित प्रतिनिधि, नागरिक कार्यकर्ता, गैर सरकारी संस्थान, प्रैस एवं मीडिया से संबंधित भारत से प्रतिभागी और विशेष रूप से उत्तराखण्ड से ।

पंजीकरण

पंजीकरण 100 प्रतिभागियों तक सीमित है।

पंजीकरण एवं शोध पत्र के सार/पूर्ण शोध पत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि: 06 जून, 2019

शुल्क: कोई नही/मुफ्त

यात्रा, ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था

यात्रा एवं किसी प्रकार के भत्ते का भुगतान नहीं होगा। अतिथि गृह में बाहर से आये प्रतिभागियों के रहने की व्यवस्था की जायेगी। दोपहर के भोजन की व्यवस्था सभी प्रतिभागियों के लिए की जायेगी।

आवेदन कैसे करें ?

आवेदन प्रपत्र भरें व उसके साथ पूरा शोध पत्र या उसका सार या चर्चा बिन्दु या प्रस्तुतीकरण आयोजन के सचिव, RTC-2019 को भेजे।

भेजने का पता

डॉ एम मुरूगानन्दम
आयोजन के सचिव (RTC-2019) एवं प्रधान वैज्ञानिक (मत्सयकी)
भा.कृ.अनु.प– भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान 218, कौलागढ़ मार्ग
देहरादून 248195
मोबाइल नं. 9411106447
फैक्स 0135-2754213, 2755386
ईमेल : mail2mmm20@gmail.com

परंपराओं और संस्कृति के पुर्नलोकन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं परामर्श कार्यशाला (RTC-2019):

पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर प्रभाव

जून 14-15, 2019

स्थल

भा.कृ.अनु.प–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान (ICAR-IISWC), देहरादून

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

218, कौलागढ़ मार्ग, देहरादून 248195

(उत्तराखण्ड, www.cswcrtiweb.org)

संगोष्ठी एवं कार्यशाला के विषय में

कार्यक्रम

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला विशिष्ट है चूँकि इसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के हित धारक एक साथ एक मंच पर आयेंगें, वे पुनः मानव विज्ञान संबंधी, विशेषकर परंपरा एवं संस्कृति पर आधारित गतिविधियों, शिकार करने, मछली पकड़ने की परंपरा, भविष्य के परिणामों पर चर्चा करेंगे और आम सहमति से पर्यावरण परिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करने वाली परंपराओं को त्यागने का मन बनायेंगे व सतत् जीविका व खाद्य सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक व तर्कसंगत उद्देश्यों से संपदा का प्रबंधन करेंगे।

विभिन्न श्रेणियों के हितधारकों को संयम से विषयवार परामर्श कर के संवेदनशील बनाना, उनसे महत्तवपूण मिथकों पर उनके प्रभाव की जानकारी साझा कर के, समूह चर्चा कर के, संवादात्मक तर्को व सलाहकार संवाद द्वारा स्थानीय आधार पर समस्या के हल के लिए सहमती बनाना।

विषय

1. **सामान्यता संस्कृति, परंपरा, धर्म** का पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के साथ संबंध।
2. **परंपरा एवं संस्कृति** पर आधारित गतिविधियों का प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण पर प्रभाव।
3. **समूह आधारित मछली के पर्व (मोण)** का नदियों, जलीय जैव विविधता, सामाजिक–संस्कृति व तिमरू (*जैन्थोजाइलम आर्मेटम* (DC))।
4. **पुर्नस्थापन को प्रोत्साहन देने व हानिकारक प्रभावों को रोकने** के लिए आवश्यक तकनीकी विकल्प, विधिक तंत्र व नीतिगत दिशानिर्देश।

उद्देश्य

पर्यावरण व प्राकृतिक सम्पदा पर मानव जनित पारंपरिक व साँस्कृतिक गतिविधियों के प्रभावों को समेकित करना।

स्थानीय जनता, मछुआरों, किसानों एवं अन्य हितधारकों को पारंपरिक विधि से मछली पकड़ने (मोण) से होने वाले प्रभावों एवं अवैज्ञानिक विधि से मछली पकड़ने व नदी के प्रबंधन के विषय में संवेदनशील बनाना।

पुनश्चर्या, सूत्रपात एवं नवीन स्थापित अवधारणाओं, स्वदेशी तकनीकी ज्ञान, मत्स्यकी, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र एवं जैव विविधता के संरक्षण, मछली पकड़ने व जलागम प्रबंधन की बेहतर समझ से प्राकृतिक संसाधन, फसल/उत्पादन, पारिस्थितकी तंत्र और सामाजिक, साँस्कृतिक आवश्यकताओं को समझ कर प्रबंधन संबंधी विषयों का गतिरोध दूर करना।

परिणाम

परंपराओं, संस्कृति, सामूहिक प्रथाओं, जलागम सम्पदा, नदी के पारिस्थितिक तंत्र, प्राकृतिक/परिस्थितिकी सम्पदा जलागम प्रबंधन की आवश्यकताओं की अंतः विषय समझ व समग्र ज्ञान के आधार और कौशल का विकास होगा।

विभिन्न हितधारक पारंपरिक मछली पर्व के प्रभाव के विषय पर संवेदनशील हो सकते है।

जनता की राय, आचरण, व्यवहार में संरक्षण के मुद्दों पर सकारात्मक परिवर्तन से परंपराओं को मानने वाले किसानों–मछुआरों, जातीय समुदायों में पारस्थितिकी के विषय में उनका ज्ञानवर्धन होगा और उनमें प्राकृतिक सम्पदाओं के संदर्भ में स्वामित्व की भावना पैदा होगी।

आवश्यक रूप से जनता द्वारा प्रबंधन के प्रयासों से, भागीदारी द्वारा हल निकलेंगें और इस प्रकार दीर्घकालिक परिणाम वाले मछली पर्व एवं अन्य इस प्रकार के पर्वों को बेहतर रूप से करने के तरीके निकलेंगें।

समय एवं आवश्यकता के साथ परिवर्तन से परंपराओं का पालन करते हुए व्यवसाय के नए विकल्प उपलब्ध होंगे।

प्रतिभागी जो कि विभिन्न वर्गों से होगें और विभिन्न वर्गों के हितधारक, मास्टर ट्रेनर, पेशेवर लोग एवं क्षेत्र में काम करने वाले होंगे, अतः इस संगोष्ठी एवं परामर्श कार्यशाला के परिणाम वृहद होगें न केवल पूरे उत्तराखण्ड के लिए, अपित, अन्य हिमालयी राज्यों एवं राष्ट्रों के लिए भी।

परंपराओं और संस्कृति के पुर्नलोकन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं परामर्श कार्यशाला
(RTC-2019): पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर प्रभाव
के लिए पंजीकरण प्रपत्र
(14–15 जून, 2019)

पूरा नाम (बड़ें अक्षरों में).....

शैक्षणिक योग्यता .....

पद .....

विभाग/संस्थान .....

अनुभव का क्षेत्र .....

पता .....

ई–मेल .....

मोबाइल. नं .....

फैक्स .....

आवास की आवश्यकता: है/नहों

शोध पत्र के सार/शोध पत्र/कथा का शीर्षक :

जिस विषय के अंतर्गत शोध पत्र /कथा आयेगी और चर्चा होगी उस पर (सही) का चिन्ह लगायें।

1. **सामान्यता संस्कृति, परंपरा, धर्म** का पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के साथ संबंध।
2. **परंपरा एवं संस्कृति** पर आधारित गतिविधियों का प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण पर प्रभाव।
3. **समूह आधारित मछली के पर्व (मो**ण) का नदियों, जलीय जैव विविधता, सामाजिक–संस्कृति व तिमरू (*जैन्थोजाइलम आर्मेटम (DC)*) पर प्रभाव।
4. **पुर्नस्थापन को प्रोत्साहन देने व हानिकारक प्रभावों को रोकने** के लिए आवश्यक तकनीकी विकल्प, विधिक तंत्र व नीतिगत दिशानिर्देश।

विशेष टिप्पणी, यदि कोई हो:
तिथि: .....
स्थान:.....

(प्रतिभागी का नाम और हस्ताक्षर)